14

मज़बूती से रहना

(6:19-34)

6:19-34 में यीशु ने परमेश्वर पर भरोसा रखने के बजाय सम्पत्ति जमा करने के विरुद्ध चेतावनी दी। उसके केन्द्रीय विषय पर ज़ोर दिया गया कि सांसारिक धन की बातें मन में होने से परमेश्वर के उपाय में विश्वास की कमी के साथ-साथ वफ़ादारी भी बंट जाती है।

परमेश्वर के प्रति समर्पण (6:19-24)

कपट के खतरे की चेतावनी देने के बाद यीशु परमेश्वर के प्रति सच्चे समर्पण के ऊंचे स्तर तक पहुंच गया। एक निष्ठ वफ़ादारी का विषय सम्पत्ति के सही विचार से गुथा हुआ है। इस संदेश को बताने के लिए तीन लघु टिप्पणियां दी गई हैं। यह ''धन'' (6:19-21) ''आंखें'' (6:22, 23), और ''स्वामियों'' (6:24) की दो बिल्कुल अलग-अलग किस्मों के बारे में है। इन दो ज़बर्दस्त अन्तरों का इस्तेमाल करते हुए यीशु ने अपने सुनने वालों को सच्ची शिष्यता की चुनौती देने वाले जीवन के मुद्दों का सामना करने को विवश किया।

दो प्रकार का धन (6:19-21)

[19]''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। [20]परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। [21]क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।''

आयत 19. यीशु की पहली चेतावनी ''**अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो**'' में मूल भाषा में शब्दों का खेल है। ''इकट्ठा करना'' यूनानी क्रिया शब्द *thēsaurizō* से, जो संज्ञा शब्द *thēsauros* से सम्बन्धित है, लिया गया है जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी में ''treasures'' हुआ है। इस आयत की पहली पंक्ति का अनुवाद ''Do not treasure up for yourselves treasures'' हो सकता है।

पृथ्वी पर वाक्यांश इन ''खज़ानों'' के अस्थाई और सांसारिक होने का संकेत है। यदि किसी व्यक्ति के पास उन भौतिक वस्तुओं को छोड़ जो उसने जमा की हों, दिखाने के लिए कुछ और न हो, तो वह वास्तव में निर्धन है। किसी के अपने स्वार्थी इस्तेमाल के लिए भौतिक वस्तुओं को जमा करने या धन की चंचलता में भरोसा रखने को प्राथमिकता देने में पाप छुपा हुआ है (1 तीमुथियुस 6:17-19; देखें मरकुस 10:17-24; लूका 12:15; 18:24)।

आदमी को सांसारिक खज़ाना जमा नहीं करना चाहिए क्योंकि **कीड़ा और काई** इन चीज़ों को **बिगाड़** सकते हैं। यीशु के समय में व्यक्ति की सम्पत्ति का हिसाब कपड़े वाली चीज़ों के द्वारा लगाया जाता था। ''कीड़ा'' आसानी से इन महंगे वस्त्रों को नष्ट कर सकता है। ''काई'' शब्द यूनानी भाषा के *brōsis* शब्द से लिया गया है, जिसका मूल अर्थ है ''खाने वाला।'' ''काई'' कीमती धातुओं को खा जाती है (याकूब 5:2, 3)।

यीशु ने आगे कहा कि सांसारिक सम्पत्ति को **चोर सेंध लगा** सकते हैं। अनुवादित शब्द ''सेंध'' के लिए यूनानी शब्द *diorussō* का मूल अर्थ है ''खोद डालना।'' चोर उन दीवारों को, जो कच्ची ईंटों की बनी होती थी खोद डालते थे (अय्यूब 24:16)। यीशु इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि सांसारिक चीज़ें अस्थाई, काम चलाऊ और खत्म हो जाने वाली होती हैं। यीशु ने अपने चेलों को गल जाने और खत्म हो जाने वाली चीज़ों पर अपनी आशा बनाने की मूर्खता याद दिलाई।

आयत 20. इन कारणों से, **स्वर्ग में धन इकट्ठा** करने का अर्थ बनता है। ''स्वर्ग में धन इकट्ठा'' करने का अर्थ परमेश्वर, उसके पुत्र और आत्मिक बातों को इस संसार की भौतिक वस्तुओं से अधिक प्रेम करना है (लूका 14:26-33; देखें कुलुस्सियों 3:1, 2)। इसका अर्थ यह है कि किसी ने परमेश्वर को महिमा देने और उसके राज्य को ऊंचा करने के लिए अपनी भौतिक आशिषों का इस्तेमाल करना चुन लिया है। उसने दूसरों को सुसमाचार बताने और जरूरतमंदों की सहायता करने का निर्णय ले लिया है। धनवान जवान हाकिम जिस पर उसकी सम्पत्ति का स्वामित्व था, यीशु ने उससे कहा, ''यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले'' (19:21)। पौलुस ने ''स्वर्ग में धन इकट्ठा करने'' का अर्थ ''भले कामों में धनी'' बनने और ''उदार और सहायता देने में तत्पर हों'' के रूप में किया (1 तीमुथियुस 6:18, 19)।

धन इकट्ठा करने की अवधारणा यहूदी धर्म की जड़ों में पाई जाती है।[1] अप्रामाणिक पुस्तक, प्रवक्ता ग्रन्थ में कहा गया है:

> आज्ञा का पालन करने के लिए दरिद्र की सहायता करो और उसे अपनी ज़रूरत में खाली हाथ मत जाने दो। अपने धन का त्याग भाई और मित्र के लिए कर दो और ज़मीन के नीचे उसमें जंग न लगने दो। सर्वशक्तिमान प्रभु की आज्ञा के अनुसार अपने धन का उपयोग करो, और तुम सोने की अपेक्षा उससे अधिक लाभ उठाओगे।[2]

टालमुड में कहा गया है, ''मेरे पूर्वजों ने वहां इकट्ठा किया जहां हाथ पहुंच सकता है, परन्तु मैंने वहां इकट्ठा किया है, जहां हाथ नहीं पहुंचता। ... मेरे पूर्वजों ने इस संसार के लिए इकट्ठा किया, परन्तु मैंने भावी संसार के लिए इकट्ठा किया है।''[3]

आयत 21. यीशु ने हमारे धन जमा करने के अनन्त दृष्टिकोण पर ज़ोर दिए बिना इस विषय की अपनी चर्चा को समाप्त किया, ''**क्योंकि जहां तेरा धन है, वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।**'' ''मन'' (*kardia*) आम तौर पर व्यक्ति के केन्द्र की ओर संकेत करता है। यहां इसके सामान्य इस्तेमाल को ध्यान में रखते हुए इसका अर्थ व्यक्ति के ''लगावों,'' ''प्राथमिकताओं'' और ''इच्छाओं'' है। यदि कोई पृथ्वी पर अपने लिए ''धन'' जमा करता है, तो उसका मन यहीं पर

है। वह कमज़ोर नज़र, सांसारिक सोच वाला और नास्तिक है। उसे परमेश्वर के साथ स्वर्गीय घर की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। इसके विपरीत यदि कोई स्वर्ग में ''धन'' इकट्ठा करता है, तो उसका मन वहीं है। वह मसीह और उसके राज्य को पहल देता है और अपने धन के साथ दूसरों की सेवा करता है। उसे यहां पर भरपूरी के जीवन का आनन्द और परमेश्वर के साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन की उम्मीद करनी चाहिए।

दो प्रकार की आंखें (6:22, 23)

22''शरीर का दीया आंख है। इसलिए यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा। 23परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अन्धियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है, यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा!''

आयत 22. यीशु ने एक दूसरे दृष्टांत में परमेश्वर के प्रति समर्पण के अपने विषय को जारी रखा। उसकी यह पुष्टि है कि ''**शरीर का दीया आंख है**।'' पहली सदी में रोशनी के लिए मुख्यतया तेल के दीयों का इस्तेमाल किया जाता था (5:15 पर टिप्पणियां देखें)। आंख मानवीय देह के लिए दीये का काम करती है; यह रोशनी करती है, जिससे शरीर को लाभ मिलता है और इसकी गतिविधियां प्रभावित होती हैं।

यह तुलना करने के बाद यीशु ने एक निष्कर्ष दिया: ''**इसलिए यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा**।'' ''निर्मल'' के लिए यूनानी शब्द (*haplous*) का अनुवाद ''एक'' (KJV) भी होता है और इसका अर्थ ''एक चित्त समर्पण'' हो सकता है। जे. सी. राईल के साथ हमें भी कहना पड़ेगा कि ''आत्मिक समृद्धि का एक बड़ा रहस्य *उद्देश्य की एकनिष्ठा* है।''[4] परन्तु इस शब्द का अनुवाद ''स्वस्थ'' (NRSV) और ''अच्छा'' (NIV) किया जाता है, जिसका अर्थ ''उदारता'' हो सकता है। प्राचीन समयों में ''भली दृष्टि'' उदारता के लिए एक मुहावरा था। नीतिवचन 22:9 में मूलतया कहा गया है, ''जिसकी आंख अच्छी है वह आशीष पाएगा, क्योंकि वह अपनी रोटी कंगाल को देता है।'' इससे भी बढ़कर, इससे जुड़ा शब्द *haplotēs* उदार होने के संदर्भों में मिलता है (रोमियों 12:8; 2 कुरिन्थियों 8:2; 9:11, 13)। ''इस आयत में *haplous* का अर्थ शायद दोहरा है जो एक निष्ठ समर्पण और उदारता की अवधारणाओं को मिलाता है।''[5]

आयत 23. आशीषित व्यक्ति जो ''उजियाले से भरा'' है, उस दुष्ट व्यक्ति से जो **अन्धियारा** है बिल्कुल अलग है। यीशु ने कहा कि इस व्यक्ति की **आंख बुरी** है। ''बुरी'' के लिए यूनानी शब्द (*ponēros*) का अनुवाद ''बुराई'' (KJV) भी हो सकता है। ''बुरी आंख'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल उसके सम्बन्ध में किया जाता था, जो ''कंजूस,'' ''लालची,'' या ''ईर्ष्यालु'' हो (व्यवस्थाविवरण 15:9; नीतिवचन 23:6; KJV)। नीतिवचन 28:22 कहता है, ''लोभी जन (बुरी आंख वाला) प्राप्त करने में उतावली करता है और नहीं जानता कि वह घटी में पड़ेगा।'' यीशु के एक दृष्टांत में, दाख की बारी के स्वामी ने यह प्रश्न पूछा: ''क्या मेरे भले के कारण तू बुरी दृष्टि [*ponēros*] से देखता है?'' (20:15)। यदि किसी व्यक्ति पर लालच हावी हो जाए,

तो उसका जीवन सचमुच तरसयोग्य हो जाता है।[6] यीशु ने कहा, ''**इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा!**''

दो प्रकार के स्वामी (6:24)

[24]''**कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वह एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।**''

आयत 24. ''स्वामी'' के लिए यूनानी भाषा के शब्द (*kurios*) जिसका अनुवाद आम तौर पर ''प्रभु'' होता है, नेतृत्व, स्वामित्व, ऊंचे पद और अधिकार को दर्शाता है। इस संदर्भ में यह अधिक स्पष्ट रूप में उसे दर्शाता है जो दासों का स्वामी है। पहली सदी में, स्वामी का दास यानी गुलाम के जीवन के हर पहलू पर पूरा-पूरा नियन्त्रण होता था। दास के पास किसी दूसरे को देने के लिए कुछ नहीं होता था, क्योंकि वह पूरी तरह से अपने स्वामी का होता था।

दो स्वामियों के लिए मिलकर एक ही दास के मालिक होने की बात सुनने में नहीं आती थी (उत्पत्ति 37:28; प्रेरितों 16:16, 19)।[7] परन्तु दास के लिए दो स्वामियों के होने की बात सुनना आम बात थी। परन्तु यदि उनकी रुचियां एक-दूसरे के विपरीत हों तो दास के लिए पूरी तरह से दोनों से **मिला** रहना असम्भव होता होगा। एक का पक्ष दूसरे से अधिक लेना आवश्यक था। जैक पी. लुईस ने सुझाव दिया कि यहां इस संदर्भ में **तुच्छ** शब्द का अर्थ ''कम प्रेम करना'' है (देखें उत्पत्ति 29:31-33; व्यवस्थाविवरण 21:15)।[8]

यीशु ने साफ़-साफ़ कहा, ''**तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।**'' ''धन'' की जगह KJV में ''माया'' है। ''माया'' के लिए यह शब्द यूनानी भाषा के *mamōnas* से लिया गया है, जो अरामी भाषा के *mamon* से लिया गया था। नये नियम में यह शब्द और कहीं लूका 16:9, 11, 13 में मिलता है। ''माया'' या ''धन'' को यहां स्वामी के रूप में दिखाया गया है। लुईस ने लिखा, ''बहुत बार आदमी का स्वामी वही होता है जिसका उसे लगता है कि वह स्वामी है।''[9]

चिन्ता पर काबू पाना (6:25-34)

[25]''**इसलिए मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे; और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? [26]आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खेतों में बटोरते हैं फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते? [27]तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? [28]और वस्त्र के लिए क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते, न कातते है। [29]तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था। [30]इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी**

जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, तुम को वह इनसे बढ़कर क्यों न पहिनाएगा? [31]इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे; [32]क्योंकि अन्यजातीय इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। [33]इसलिए पहिले तुम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

[34]अत: कल की चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिए आज ही का दु:ख बहुत है।''

पूरे दिल से परमेश्वर को समर्पित होने वाला व्यक्ति धन का दास नहीं बनेगा, यानी पृथ्वी पर धन जमा नहीं करेगा। इसके विपरीत वह दूसरों को मसीह को जानने और ज़रूरतमंदों की सहायता करते हुए उदार होगा (6:19-24)। यह व्यक्ति अपने जीवन में परमेश्वर के राज्य को पहल देते हुए यह भरोसा करता है कि परमेश्वर उसकी सम्भाल कर लेगा (6:25-34)।

यीशु ने चिन्ता करने के विरुद्ध ताड़ना के साथ आरम्भ किया (6:25) और फिर ''पक्षियों'' (6:26, 27) और ''फूलों'' (6:28-30) का इस्तेमाल करते हुए प्रकृति में से इस नियम को समझाया। उसने अपने चेलों को चिन्ता करनी बन्द करके राज्य का पीछा करना आरम्भ करने को कहते हुए इस ताड़ना को दोहराया (6:31-34)।

आयत 25. ''इसलिए'' कहते हुए यीशु उस बात की ओर संकेत कर रहा था जो उसने पहले कही थी। यदि कोई अपने स्वामी के रूप में परमेश्वर की सेवा करता है, तो उसे **चिन्ता करने** का कोई कारण नहीं है; क्योंकि परमेश्वर उसे वह दे देगा, जो उसकी सेवा के लिए आवश्यक है। ''चिन्ता'' के लिए यूनानी शब्द (*merimnaō*) का अर्थ है ''फिक्र होना'' या ''बेवजह चिन्तित होना।'' चिन्ता उस ऊर्जा को सोख लेती है जो उसके स्वामी की सेवा में खर्च होनी चाहिए। यह व्यर्थ है; और इस कारण इसकी मनाही की गई है। पौलुस ने लिखा, ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं'' (फिलिप्पियों 4:6; देखें 1 पतरस 5:7)।

प्राण के लिए यूनानी शब्द (*psuchē*) का इस्तेमाल नये नियम में विभिन्न प्रकार से हुआ है। इसमें हमारे अस्तित्व के मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक, और आत्मिक पहलू समा सकते हैं। इस आयत में, ''प्राण'' स्पष्टतया ''शरीर के जीवित सिद्धांत'' को कहा गया है।[10] और यह **शरीर** (*sōma*) के साथ एक समानांतरता बनाता है। मनुष्यों को शारीरिक रूप में जीवित रहने के लिए **भोजन, पानी** और **वस्त्र** आवश्यक है। माइकल जे. विलकिन्स ने ध्यान दिलाया, ''यीशु जीवन के प्रतिदिन के संघर्ष को समझने वाले लोगों से बात कर रहा है। उनकी दिन भर की अधिकतर दिनचर्या जीविका के लिए पर्याप्त सामान इकट्ठा करने की कोशिश में बीत जाती थी।''[11] परन्तु प्राण का महत्व शारीरिक पोषण से कहीं बढ़कर और भले उद्देश्यों से है।

आयत 26. अपने पहले उदाहरण में यीशु ने आश्वासन दिए कि परमेश्वर **आकाश के पक्षियों** के लिए भोजन उपलब्ध कराता है। मनुष्यों के विपरीत **वे न बोते हैं, न काटते हैं, और**

न खेतों में बटोरते हैं। इस कथन से हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि पक्षी अपने भोजन के लिए कुछ भी नहीं करते। उन्हें सुबह-सुबह नाश्ते के लिए केंचुए इकट्ठे करते देखा जा सकता है। इसके बावजूद यह जन्तु अपने खाने के लिए सामान बनाने के लिए कुछ नहीं करते; इसे उन्हें परमेश्वर द्वारा दिया जाता है। वे केवल उसे पाने के लिए जो परमेश्वर ने उनके लिए पहले ही दे दिया है, प्रयास करते हैं। इस उदाहरण में यीशु छोटे के बाद बड़ा तर्क इस्तेमाल कर रहा था। यदि परमेश्वर इन नाचीज़ पक्षियों की देखभाल करता है तो निश्चय ही वह लोगों के लिए जिन्हें उसने अपने स्वरूप बनाया, के लिए भोजन देगा (उत्पत्ति 1:27)। वास्तव में, मानवीय जीव पक्षियों से **अधिक मूल्य रखते** हैं (देखें भजन संहिता 8:3-8)।

आयत 27. चिन्ता करने की व्यर्थता को दिखाने के लिए, यीशु ने पूछा, ''**तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?**'' इस अलंकारिक प्रश्न का उत्तर है ''कोई नहीं।''

''अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा'' की जगह KJV में ''अपने कद में एक हाथ भी बढ़ा'' है। ''हाथ'' के लिए यूनानी शब्द (*pēchus*) का अर्थ मूलतया ''कोहनी से कलाई तक बांह'' था और बाद में इसका इस्तेमाल माप की एक इकाई (लगभग 18 इन्च) के लिए होने लगा। परन्तु कई बार विशेष मापों का इस्तेमाल समय के एक भाग के संकेत के लिए किया जाता था (भजन संहिता 39:5)। ''कद'' शब्द (*hēlikia*) का अर्थ किसी की ''उम्र'' भी हो सकता है (यूहन्ना 9:21; इब्रानियों 11:11)। यीशु ''वह छोटी चीज़'' की बात कर रहा है (लूका 12:25, 26), जिस कारण अधिकतर आधुनिक संस्करणों में इन शब्दों का अनुवाद किसी के जीवनकाल में एक छोटा काल जोड़ने के अर्थ में किया गया है। इस अनुवाद का इस्तेमाल करने के तर्क का आधार यह है कि विकल्प अर्थात किसी के कद में एक हाथ बढ़ाना, एक अतुलनीय काम होगा! इसलिए NASB में इस्तेमाल की गई शब्दावली सही लगती है।

आयतें 28, 29. अपने दूसरे उदाहरण में, यीशु ने **वस्त्र** पर ध्यान केन्द्रित किया। एक बार फिर उसने **जंगली सोसनों** का इस्तेमाल करते हुए प्रकृति की ओर ध्यान दिलाया। फूल की सुन्दरता किस कारण से है? यह न तो **परिश्रम करते** और न **ताकते** हैं, तौभी उन सुन्दर वस्त्रों को बनाने के लिए जिनमें वे लिपटे होते हैं, रंगों के चित्र पट मिल जाते हैं। फूलों की किस्में, रंग, आकार और खुशबू अद्‌भुत हैं।

इन सोसनों के सम्बन्ध में यीशु ने कहा कि **सुलैमान भी** चाहे कितने भी बढ़िया कपड़े पहनता हो पर उसने **उनमें से किसी के समान वस्त्र** नहीं पहने हो सकते। सुलैमान राजा न केवल अपनी बड़ी बुद्धि के लिए बल्कि अपनी बड़ी सम्पत्ति के लिए भी प्रसिद्ध था (1 राजाओं 3:12, 13; 10:1-29; 2 इतिहास 9:1-28); तौभी उसके बढ़िया से बढ़िया शाही लिबास भी फूलों की उस सुन्दरता के सामने जो परमेश्वर ने उन्हें पहनाई, फीके हैं। यह हो सकता है कि यीशु के दिमाग में कोई विशेष फूल नहीं था। परन्तु बैंजनी रंग के गुलहवा का सुझाव दिया गया है, शायद सुलैमान के वस्त्र की तुलना में उससे ऊंचा है (देखें न्यायियों 8:26)। विलकिन्स ने लिखा है, ''आज भी लाल और बैंजनी गुलहवा (गुलहवा मुकुटनुमा) जिसकी डण्डी दस इंच होता है, नीले सोसन के साथ, गलील की झील के ऊपर पहाड़ियों पर जंगल में होता है।''[12]

आयत 30. जो **परमेश्वर** सुन्दर फूलों को वस्त्र देता है वह **मैदान की घास को** भी देता

है। परन्तु यह घास केवल थोड़ी देर के लिए है: ''क्योंकि सूर्य उदय होते ही कड़ी धूप पड़ती है और घास को सुखा देती है, और उसका फूल झड़ जाता है, और उसकी शोभा जाती रहती है; उसी प्रकार धनवान भी अपने मार्ग पर चलते हुए धूल में मिल जाएगा'' (याकूब 1:11; देखें 1 पतरस 1:24)। यह **आज है** परन्तु **कल भाड़ में झोंकी जाएगी**। निर्धन लोग इन सूखे हुए फूलों को लेकर आज के लिए ईंधन के रूप में इन्हें इस्तेमाल कर लेंगे। फिर यीशु का तर्क छोटे से बड़े की ओर चला गया। यदि परमेश्वर ऐसी महत्वहीन वनस्पति को वस्त्र पहनाता है, तो निश्चय ही वह अपने लोगों को वस्त्र पहनाएगा।

''हे अल्पविश्वासी'' अभिव्यक्ति मत्ती में कई बार मिलती है (8:26; 14:31; 16:8; 17:20)। तालमुड में कहा गया है, ''कौन है जिसकी टोकरी में रोटी का टुकड़ा है हो और वह कहे, 'मैं कल क्या खाऊंगा?' केवल उनके लिए है जो अल्पविश्वासी हैं।''[13]

आयतें 31, 32. यहां पर यीशु ने **क्या खाएंगे, या क्या पहनेंगे** की **चिन्ता न** करने की अपनी मूल ताड़ना दोहराई (देखें 6:25)। परमेश्वर जानता है कि हमारी कुछ आवश्यकताएं हैं, और वह हमारी इन आवश्यकताओं का उपाय करेगा, जब हम अपना काम करेंगे। चिन्ता करने से हमें भोजन, कपड़ा या मकान नहीं मिल जाएगा, न ही कोई अपने जीवन में एक मिनट बढ़ा सकता है। यदि हमारे पास भोजन, कपड़ा और रात काटने के लिए अपने सिर पर छत है, तो हमें इससे बढ़कर असल में क्या चाहिए? चिन्ता से कुछ लाभ नहीं होता। पौलुस ने लिखा, ''पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए'' (1 तीमुथियुस 6:6-8)।

यीशु ने कहा कि **अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं**। अन्य शब्दों में, खाने, पीने और पहनने की कोशिश में लगे रहना व्यक्ति को काफ़िर जैसा बना देता है, परमेश्वर को नहीं जानते (देखें इफिसियों 2:11, 12)। रॉबर्ट एच. माउंस ने कहा, ''चिन्ता व्यावहारिक नास्तिक होना है और परमेश्वर का सामना करना है।''[14] अन्यजातियों से तुलना करने पर बेशक यीशु के सुनने वाले चौंक गए होंगे, क्योंकि इससे वे उसकी बातों को बड़े ध्यान से विचार करने के लिए विवश हुए होंगे। पहाड़ी उपदेश में ''अन्यजातियों'' का यह तीसरा हवाला है (5:47 पर टिप्पणियां देखें; 6:7)।

आयत 33. जीवन की शारीरिक आवश्यकताओं की खोज करने के बजाय यीशु ने अपने चेलों से कहा, **पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो**। ''राज्य'' (*basileia*) और ''धर्म'' (*dikaiosunē*) शब्द पूरे पहाड़ी उपदेश में बार-बार आते हैं (5:3, 6, 10, 19, 20; 6:1, 10, 13, 33; 7:21)।

''उसके राज्य'' परमेश्वर के शासक या सत्ता को कहा गया है, जिससे मसीह की कलीसिया की स्थापना में आकार लिया (6:10 पर टिप्पणियां देखें)। बाद में मत्ती में, ''राज्य'' (*basileia*) और ''कलीसिया'' (*ekklēsia*) का इस्तेमाल लगभग एक दूसरे के स्थान पर हुआ है (16:18, 19)। ''उसके धर्म'' जीने के परमेश्वर के मानदण्ड को कहा गया है, जिसमें दिल से परमेश्वर की आज्ञा को मानना आवश्यक है (5:6, 20 पर टिप्पणियां देखें)। पुराने समयों में, परमेश्वर के धर्ममय नियम मूसा की व्यवस्था के द्वारा प्रकट किए जाते थे। परन्तु मसीह एक

नई वाचा बनाने के लिए आया। इस वाचा में भागीदार होने वालों के लिए चुनिंदा आज्ञापालन को माने बिना मसीह की सारी शिक्षा को मानने के लिए सहमत होना आवश्यक है।

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसकी ''खोज'' करें (देखें प्रेरितों 17:26, 27; इब्रानियों 11:6)। अनुवादित शब्द ''खोज'' का इब्रानी शब्द (*zēteō*) नये नियम में कई बार मिलता है। यहां यह वर्तमान आज्ञा है, जो निरन्तर खोज का संकेत देती है न कि केवल एक बार होने वाली घटना का। व्यक्ति के जीवन की प्राथमिकता परमेश्वर के ''राज्य और उसके धर्म'' को खोजना होनी चाहिए। पौलुस के शब्दों में, इसका परिणाम ''धर्म और मेल मिलाप और वह आनन्द'' होगा जो पवित्र आत्मा से होता है (रोमियों 14:17)। परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म को पहल देने से भौतिक चिन्ताओं की बेकार चिन्ता खत्म हो जाती है। हमारे प्रभु ने प्रतिज्ञा की कि यदि परमेश्वर की सन्तान ऐसा करती है, तो **ये सब वस्तुएं** (जीवन की आवश्यकताएं) हमें उपलब्ध हो जाएंगी (देखें फिलिप्पियों 4:11-13)।

आयत 34. यीशु ने निष्कर्ष निकाला, ''**अतः कल की चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिए आज ही का दुःख बहुत है**।'' चेले को कल की अति चिन्ता नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक दिन में एक ही बार जीना आवश्यक है। भविष्य की सम्भावी समस्याओं से चिन्तित होने के बजाय वर्तमान की वास्तविक समस्याओं का सामना करना आवश्यक है।

भविष्य की चिन्ता करना वास्तव में वर्तमान का सामना करने की व्यक्ति की योग्यता को कम कर देता है, और इससे उसकी उम्र भी घटती है। प्रवक्ता नामक ग्रन्थ में बाइबल की अप्रमाणिक पुस्तक में कहा गया है कि ''चिन्ता समय से पहले किसी को बूढ़ा बनाती है।''[15] इसके अलावा, बहुत सी बातें जिनकी लोग चिन्ता करते हैं कभी होती ही नहीं; जीवन की परिस्थितियां पल-पल बदलती हैं (नीतिचन 27:1; याकूब 4:13-17)। टालमुड में कहा गया है, ''कल की परेशानी के लिए परेशान मत हो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि कल क्या होने वाला है, और शायद कल वह हो ही न, और इस कारण वह उस संसार पर शोक करता पाया जाएगा जो उसका नहीं है।''[16] इसमें यह भी कहा गया है, ''एक घण्टे में ही काफ़ी मुश्किल होती है।''[17]

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

धन इकट्ठा करना (6:19-24)

आज अमेरिका के अधिकतर लोग अपनी निपटाने योग्य आय का अधिकतर भाग उस धन पर खर्च करते हैं जो शीघ्र ही कल का कूड़ा बन जाता है। वह चीज़ जो हमें लगता था कि हमारे पास होनी चाहिए, अगले साल की सेल के गर्ज में किसी खज़ाने के शिकार के लिए सौदा बन जाता है। किसी बुद्धिमान ने लिखा है, ''अमेरिकी लोग, उन चीज़ों को खरीदने के लिए जिनकी उन्हें आवश्यकता नहीं है, उन लोगों को प्रभावित करने के लिए जो उन्हें पसन्द नहीं हैं उस धन को खर्च करते हैं जो उनके पास नहीं है।''

बहुत से लोग भौतिक धन को पाने से इतना भरे होते हैं कि वे उसका आनन्द नहीं ले पाते जो पहले से उनके पास है। सांसारिक धन से दिमाग भरे होना उस बड़े स्टिकर से पता चलता है

जिसमें कहा गया है, ''जो सबसे अधिक खिलौनों को साथ लेकर मरता है वह जीत जाता है।'' परन्तु हम सब जानते हैं कि ''जाते समय आप इसे साथ नहीं ले जा सकते।'' पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं'' (1 तीमुथियुस 6:7)। मिस्र के कुछ फिरौनों को बड़े-बड़े पिरामिडों में उनके धन के साथ दफ़ना दिया जाता था ताकि वे इस जीवन के बाद उन सम्पत्तियों का आनन्द ले सकें। इसके विपरीत उनका धन लुटेरों, पुरातत्व वेताओं और आने वाली पीढ़ियों के अजायब घरों की सम्पत्ति बन गया है।

हमारा ध्यान संसार की सम्पत्ति इकट्ठा करने पर नहीं बल्कि परमेश्वर के राज्य को बनाने और दूसरों की सहायता करने पर होना आवश्यक है। इन उद्देश्यों के लिए परमेश्वर की ओर से मिली आशिषों का इस्तेमाल करके हम स्वर्ग में धन इकट्ठा कर सकते हैं। यदि हमारा धन पृथ्वी पर है, तो हम स्वर्ग के लिए तैयारी नहीं करेंगे: ''क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा'' (6:21)। तब हम स्वर्ग में मिलने वाले सनातन आनन्द को खोएंगे नहीं। न्याय के दिन अपने खातों में ''पैसे कम'' या ''खाता बन्द'' लिखा होने पर कितना गलत होगा!

मसीही लोगों के रूप में हमारी निष्ठा मसीह के साथ है। हम एक ही समय में उसकी और धन की सेवा नहीं कर सकते। जब कोई अपने सांसारिक धन का दास बन जाता है, तो उसने मसीह को अपने जीवन में से निकाल दिया है। पसन्द चुननी आवश्यक है। यदि हम अनन्तकाल के लिए परमेश्वर के साथ रहना चाहते हैं, तो हमें पाप और अपनी सम्पत्ति से बढ़कर उसकी और उसके धर्म की सेवा करना चुनना आवश्यक है (देखें रोमियों 6:16-18)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर (6:24)

अमेरिका के संस्थापक परमेश्वर में विश्वास रखने वाले लोग थे जिनका मानना था कि एक देश के रूप में हमारी सफ़लता परमेश्वर की ओर से आशीष है। उन्होंने अपने नोटों के ऊपर ''In God We Trust'' (अर्थात हमारा भरोसा परमेश्वर में है) छापने की परम्परा आरम्भ की, क्योंकि उनका मानना था कि हमारी स्वतन्त्रता के लिए उसका उपाय ज़िम्मेदार है और वही भविष्य में सफलता तय करेगा। वे चाहते थे कि हम ''सर्वशक्तिमान डॉलर'' के बजाय सर्वशक्तिमान परमेश्वर में भरोसा करें। डॉलर के दूसरी ओर, सब कुछ देखने वाली आंख (परमेश्वर के उपाय का सांकेतिक) के द्वारा जंगल में से पिरामिड के उठने (हमारी सफलता का संकेत) से सजाया गया है। इसके ऊपर अंकित लातीनी भाषा में लिखे (*Annuit Coeptus*) का अनुवाद ''वह हमारे सामान का समर्थन करता है'' या ''परमेश्वर हम पर मुस्कुराता है'' हो सकता है।

डेविड स्टिवर्ट

चिन्ता (6:25-34)

चिन्ता के लिए अंग्रेजी भाषा का शब्द ''worry'' जर्मन भाषा के एक पुराने शब्द से निकला है जिसका अर्थ है ''गला घोंटना।'' चिन्ता यही काम करती है। यानी यह जीवन के आनन्द का गला दबा देती है और हमें और परेशानियों में छोड़ देती है। अपनी चिन्ताओं के कारण बहुत से लोग अपने नाखून चबाते हैं, इधर-उधर टहलते हैं या अपने विचारों से लड़ते हुए रात-रात भर

जागते हैं। कुछ तो सिग्रेट, शराब और नशे की दूसरी लत अपना लेते हैं। चिन्ता निश्चय ही हम से बहुतायत का जीवन जीना छीन सकती है।

नवयुवा और युवा व्यस्क आम तौर पर अपने मित्रों, डेटिंग के सम्बन्धों, पढ़ाई और भविष्य सहित कई बातों की चिन्ता करते हैं। कुछ लोग पहनने की चिन्ता करते हैं; उन्हें लगता है कि उन्हें नये से नये फैशन और बढ़िया से बढ़िया ब्रांड की चीज़ें पहननी चाहिए। बूढ़े लोगों को जवान दिखने और लम्बी उम्र की चिन्ता रहती है। ''जवान'' रहने के कुछ प्रयासों से जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है, पर ऐसी बातों पर चिन्ता करने से वास्तव में हमारी उम्र घट सकती है। कई अध्ययनों में पाया गया है कि चिन्ता स्वास्थ्य की गम्भीर समस्याओं में योगदान देती है। डॉक्टर चार्ल्स एच. मायो, जिसने अपने भाई के साथ मायोक्लिनिक स्थापित की, ने लिखा, ''चिन्ता रक्त-संचार, हृदय, ग्रंथियों, और पूरी रक्त संचार प्रणाली को प्रभावित करती है। मुझे कभी ऐसा कोई आदमी नहीं मिला जो अधिक काम के कारण मरा हो, पर संदेह के कारण मरने वाले कई मिले हैं।''[18]

टिप्पणियां

[1]टोबीत 4:9, 10; 4 *एज्रा* 6.5; *टैस्टामेंट ऑफ़ लेवी* 13.5; *साम्स ऑफ़ सॉलोमन* 9.5; मिशनाह *पीह* 1.1. [2]प्रवक्ता ग्रंथ 29:10, 11 (NRSV)। [3]टालमुड *बाबा बथरा* 11ए। [4]जे. सी. राइल, *राइल' स एक्सपोज़िटरी थॉट्स ऑन द गोसपल्स: मैथ्यू-मार्क* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, तिथि नहीं), 56. [5]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 138-39. [6]देखें प्रवक्ता ग्रंथ 14:9. [7]*टैस्टामैंट ऑफ़ जोसेफ* 14.2; मिशनाह *पेसाहिम* 8.1. [8]जैक पी. लूईस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 107. [9]वही। [10]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 349, एन. 334.

[11]*जौंडरवन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 48 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [12]वही, 49. [13]टालमुड *सोटह* 48बी। [14]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 61. [15]प्रवक्ता ग्रंथ 30:24 (NRSV; 26 हिन्दी-अनुवादक)। [16]टालमुड *सन्हेद्रिन* 100बी. [17]टालमुड *बेराक्रोथ* 9बी। [18]*वरीस: वेबस्टर'स क्रोटेशंस, फैक्ट्स एंड फ्रेज़ज़* (सेन डियागो: आइकन ग्रुप इंटरनैशनल, 2008), 8 में उद्धृत।